ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

3

वर्ष-18 | अंक-11 | सितम्बर-I-2018 | (पाक्षिक) | माउण्ट आबू | Rs. 10.00

'भगवद् गीता : योर सतनव ऑन द रोल ऑफ लाइफ' विषय का सेमिनार बना आकर्षण

यू.के.में भी जागी गीता के रहस्य को जानने की जिज्ञासा

लेसीस्टर यू.के.। ब्रह्माकुमारीज़ के हार्मनी हाउस में 'भगवद् गीताः योर सतनव ऑन द रोल ऑफ लाइफ' विषय पर आयोजित सेमिनार में नई और पुरानी दोनों ही जनरेशन में आने वाली चुनौतियों से निपटने में गीता शास्त्र कैसे हमारा मददगार है, इसके बारे में बताते हुए ब्र.कु. जयन्ती,द यूरोपियन डायरेक्टर ऑफ ब्रह्माकुमारीज़ एंड एन.जी.ओ. रिप्रेज़ेन्टेटिव टू द युनाइटेड नेशन्स,जेनेवा ने कहा कि श्रीमद् भगवद् गीता विभिन्न भाषाओं में अनुवादित और दुनिया भर में सुना व पढ़ा जाने वाला शास्त्र है। उन्होंने बताया कि भगवद् गीता में कुछ ऐसे सत्यों का उल्लेख किया गया है जो परम सत्य, सनातन एवं अविनाशी हैं, जिसका समय के साथ कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। गीता में महाभारत दृश्य के दौरान दर्शाया गया है कि भगवान अर्जुन को श्रीमत दे रहे हैं कि इस युद्ध में तुम्हारी क्या भूमिका होनी चाहिए। ये कोई हिन्दु शास्त्र नहीं है, क्योंकि विभिन्न लोगों के मतानुसार जब गीता गाई गई तब इस सृष्टि पर अहिंसक देवी देवता धर्म था, तो फिर ऐसा भयंकर युद्ध होना एक विचारणीय विषय है। इसमें दर्शाया गया कि युद्ध के समय एक ओर विप्रीत बुद्धि अक्षौणी सेना है, जिसकी भगवान से प्रीत नहीं है और दूसरी ओर प्रीत बुद्धि पाँच पाण्डव हैं, जिनकी परमात्मा से गहरी प्रीत जुड़ी हुई है। अगर आज के विश्व पर भी एक नज़र डालें तो हम पायेंगे कि अरबों की संख्या में लोग हैं जो कहते हैं कि वे अपने अपने धर्म में विश्वास रखते हैं, लेकिन उनमें से ही बहुत थोड़े लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि हमें सिर्फ परमात्म निर्देशों पर ही चलना है, जिनका धर्म से नहीं, परमात्मा से प्रेम है। तो यहाँ एक प्रश्न उठता है कि गीता में वर्णित महाभारत युद्ध हिंसक था या अहिंसक। उन्होंने बताया कि गीता में काम वासना को मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु बताया गया है और अंत में ये भी कहा गया है कि नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा। अर्थात् मोह को नष्ट करो और स्मृति स्वरूप बन जाओ। जब अर्जुन को ये ज्ञान स्पष्ट हो जाता है तो वो कहता है कि मैंने मोह पर विजय प्राप्त कर ली है। इससे ये सिद्ध होता है कि यहाँ कोई मनुष्य को शत्रु नहीं बताया जा रहा है। बल्कि भगवान कहते हैं कि मन ही तुम्हारा मित्र है और मन ही तुम्हारा शत्रु तथा साथ ही वे मनमनाभव का मंत्र भी देते हैं कि अपने मन से मुझे याद करो। परमात्मा को याद करने के दौरान यदि हमारा मन इधर उधर भटक रहा है तो उस समय मन हमारा शत्रु बन जाता है, और जिस समय वो परमात्म याद में हमारा सहयोगी है, उस समय वो हमारा मित्र बन जाता है। तो जब हम इस बारे में समझदारी के साथ सोचेंगे तो हमें समझ आयेगा कि ये बाहर में होने वाला युद्ध नहीं है, बल्कि ये तो आंतरिक युद्ध है जो हमारे भीतर चलती रहती है। तो जब परमात्मा द्वारा इस शब्द का उच्चारण होता है कि 'मारो', तो उस समय परमात्मा का आशय इस बात से होता है कि स्वयं को आत्मा समझो और अपने देह तथा दैहिक सम्बंधियों को भूल जाओ, तब परमात्मा को याद करना अति सहज हो जायेगा। इससे स्मष्ट होता है कि परमात्मा हमें लोगों का मारना नहीं या हिंसा करना नहीं सिखाते पर हमारे मन के विकृत विचारों द्वारा मिलने वाले दुःखों को भूलने वाला मनोयुद्ध सिखाते हैं, तो ये कोई हिंसक नहीं, पर अहिंसक मनोयुद्ध है। इस बात से सिर्फ ब्रह्माकुमारीज़ ही सहमत नहीं है, बल्कि भारत के पूर्व राष्ट्रपति राधाकृष्णण जी का भी यही मत रहा।

गीता का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए युरोप में ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु. जयंती। ध्यानपूर्वक सुनते हुए शहर के प्रबुद्धजन।

दिल्ली। राष्ट्रपति महामहिम रामनाथ कोविंद को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. आशा, निदेशिका,ओ.आर.सी. तथा ब्र.कु. आशा,क्षेत्रीय संचालिका,खानपुर।

देश भर से व्यापार एवं उद्योग से जुड़े लोग हुए त्रिदिवसीय सम्मेलन में शरीक

व्यापारिक प्रतिस्पर्धा से बढ़ता तनाव

ज्ञानसरोवर। ब्रह्माकुमारीज़ के व्यापार व उद्योग सेवा प्रभाग द्वारा उद्योगपतियों के लिए आयोजित चार दिवसीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए यू.एस.ए. सेनफ्रांसिसको से आए गूगल प्रबंध निदेशक किरणमणि ने कहा कि व्यापारिक क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा तनाव का कारण बन गई है। मूल्यों के अभाव में बढ़ता स्वार्थ व्यापारिक सम्बंधों में कड़वाहट घोल रहा है। साधन व धन होते हुए भी अशांति बढ़ रही है। ज्ञानसरोवर निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला ने कहा कि सत्यता व ईमानदारी के अभाव में व्यापारिक सिद्धान्तों से समझौता करने के बाद ही पारस्परिक सम्बंधों में कड़वाहट आती है। इसके लिए सम्बंध-सम्पर्क में पारदर्शिता होना ज़रूरी है। जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि मानव स्वयं में एक शक्ति का पुंज है। अपनी अंतर्निहित शक्तियों की पूंजी को पहचान कर उसे कार्य में लगाने से किसी भी क्षेत्र में सुगम तरीके से कामयाबी अर्जित की जा सकती है।

शिकागो से आए वैश्विक सकारात्मक चिंतक पीयूष सिंघानिया ने कहा कि आध्यात्मिकता मन को सब प्रकार के बोझ से मुक्त कर जीवन को खुशहाल बनाती है। फिल्म अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा की माता मधु चोपड़ा ने कहा कि जीवन में पवित्रता को अपनाने से ही सर्व समस्याओं का हल संभव है।

प्रभाग उपाध्यक्ष मदन मोहन शर्मा ने कहा कि जीवन में ईश्वरीय समर्पण व सच्ची लगन से कोई भी कार्य किया जाता है तो उसमें सफलता शत् प्रतिशत मिलती है।

दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. सुरेन्द्र, प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. मदन मोहन शर्मा, मधु चोपड़ा, ब्र.कु. योगिनी, ब्र.कु. डॉ. निर्मला, गूगल प्रबंध निदेशक किरण मणि,यू.एस.ए., ब्र.कु. लालजी पटेल, ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. गीता तथा ब्र.कु. मोहन पटेल।

भारत आध्यात्मिक मूल्यों की धरोहर

रायपुर छ.ग.।

छत्तीसगढ़ पर्यटन मण्डल के महाप्रबंधक डॉ. संजय सिंह ने कहा कि छत्तीसगढ़ सहित कई राज्य पर्यटन के लिए देश के खूबसूरत क्षेत्र हैं। ये सभी प्राकृतिक दृष्टि से अत्यन्त सम्पन्न हैं। ज़रूरत सिर्फ इन क्षेत्रों का विकास कर लोगों के सम्मुख लाने की है। डॉ. संजय ब्रह्माकुमारीज़ के शिपिंग एविएशन एंड टूरिज़्म प्रभाग द्वारा आयोजित 'ट्रेन द ट्रेनर्स' विषयक कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने ब्रह्माकुमारी संस्थान की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह संस्थान पर्यटन के माध्यम से लोगों में परस्पर प्रेम और भाईचारा बढ़ाने का सराहनीय कार्य कर रहा है। मुम्बई से आईं शिपिंग एंड एविएशन विंग की समन्वयक ब्र.कु. प्रशान्ति ने कहा कि भारत की प्राचीन संस्कृति और आध्यात्मिक मूल्यों को पुनर्जीवित कर देश के गौरव को वापस लौटाना ही इस विंग का मुख्य उद्देश्य है। संस्थान की क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी ने कहा कि मन के भावों को बदलने के लिए पर्यटन बहुत ही अच्छा माध्यम है। भौगोलिक दृष्टि से छत्तीसगढ़ सचमुच ही सुंदर प्रदेश है। उन्होंने कहा कि यहाँ के पर्यटन स्थल मन को लुभाते हैं। लेकिन इनका प्रचार प्रसार और ज़्यादा करने की ज़रूरत है।